६. दो संस्मरण

– *संजय सिन्हा*

हंस और आदमी

आपने कभी हंसों को उड़ते हुए देखा है ?

जरूर देखा होगा । आपने देखा होगा कि बहुत ऊपर आसमान में अंग्रेजी अक्षर 'वी' (v) के आकार में ये उड़ते चले जा रहे होते हैं ।

जब मैं छोटा था और सितंबर-अक्तूबर की हलकी ठंड में घर की छत से कभी हंसों की ये उड़ान दिख जाती तो मैं हैरान रह जाता । ऐसा लगता मानो बहुत से अनुशासित सिपाही सफेद पंखों में लिपटकर हवा में तैरते चले जा रहे हैं ।

मेरे मन में ढेरों सवाल उठते । आखिर ये इस तरह 'वी'आकार बनाकर क्यों उड़ रहे हैं ? ये सब कहाँ जा रहे हैं ? सबसे पीछेवाला सबसे आगे क्यों नहीं आने की कोशिश कर रहा ? बीचवाला क्यों अपनी जगह पर उसी रफ्तार से चला जा रहा है ? क्या किसी ने इन्हें निर्देश दिया है कि ऐसे ही उड़ना है ? कौन है इनका निर्देशक ?

बहुत से सवाल लेकर जब मैं माँ के पास आता, तो माँ मेरा सिर सहलातीं । कहती कि ये मानसरोवर के राजहंस हैं ।

''तो ये सारे हंस जो इस तरह एक गति से उड़ते हैं, उसका क्या मतलब हुआ ?''

''ये आपस में रिश्तेदार हैं ।''

''सबसे आगे वाला उनका नेता होता है । वही उड़ने की रफ्तार और दिशा तय करता है । उसके पंखों को बाकियों से ज्यादा मेहनत करनी होती है । सामने आने वाले खतरों को वह पहले पहचानता है । वह हवा को काटता है, उसके बाद बाकी के हंस हवा को काटते हुए चलते हैं और अपने से पीछे उड़ने वाले हंसों के लिए वह उड़ान को आसान बनाते चलते हैं ।'' माँ कहतीं ।

''लेकिन माँ, सबसे आगे वाला ज्यादा मेहनत करता है और सबसे पीछेवाले के लिए रास्ता आसान बनाता चलता है, ऐसा क्यों ? उससे उसे क्या फायदा ?''

''मैंने कहा न कि ये रिश्तेदार हैं । ये जानते हैं कि कर भला तो हो भला इसलिए ये एक-दूसरे का साथ देते हुए चलते हैं । ये बहुत दूर तक उड़ते हुए चले जाते हैं । ये एक बार में दस घंटे उड़ सकते हैं ।''

परिचय

जन्म : १९६४, पटना (बिहार)

परिचय : संजय सिन्हा जी विगत तीस वर्षों से सक्रिय पत्रकारिता से जुड़े हुए हैं । आपकी कहानियाँ, संस्मरण आदि अनुभवजन्य हैं । आपकी रचनाएँ पत्र-पत्रिकाओं में नियमित छपती रहती हैं ।

प्रमुख कृतियाँ : '६.१ रिक्टर स्केल' (उपन्यास), 'समय' (संस्मरण संग्रह) ।

गद्‌य संबंधी

प्रस्तुत प्रथम संस्मरण पक्षियों के प्रतीक लेकर मनुष्य के आत्मबल को मजबूत करने तथा दृढ़निश्चयी होकर सामूहिक जीवन जीने की उपयोगिता को दर्शाता है। इस संस्मरण में सिन्हा जी ने नेतृत्व के गुण, उसकी जवाबदेही को स्पष्ट किया है।

दूसरे संस्मरण में पारिवारिक रिश्तों-संबंधों के महत्व को दर्शाया गया है । किस तरह लेखक के परिवार ने अपरिचितों को सहजता से आश्रय दिया, सहायता की, वह आज के समय में अनुकरणीय है ।

‘‘दस घंटे ?’’

‘‘हाँ, बेटा । कई बार उससे भी ज्यादा । इनमें सबसे आगेवाला हंस सबसे अधिक मेहनत करता है । फिर जब वह थकने लगता है तो सबसे पीछेवाला उसकी जगह लेने पहुँच जाता है । ऐसे ही सारे हंस उड़ते हुए अपनी-अपनी जगह बदलते चले जाते हैं । मैंने बताया न, सबसे आगेवाला नेता होता है और वह दूसरे हंसों के लिए उड़ान को आसान बनाता हुआ अपने पंखों से हवा को काटता चलता है । पीछेवाले को कम मेहनत करनी होती है, उसके पीछेवाले को और कम । इस तरह ये बीच हवा में ही सुस्ताते हुए, एक-दूसरे का साथ देते हुए हजारों मील का सफर तय कर लेते हैं ।’’

माँ फिर मुझे हंसों की ढेर सारी कहानियाँ सुनातीं । बतातीं कि हंस मोती खाते हैं । हंसों के पास नीर-क्षीर अलग करने का विवेक होता है । वे दूध और पानी को अलग कर सकते हैं। एक बार एक शिकारी ने किसी हंस को मार दिया तो कैसे सिद्‌धार्थ ने उसे बचा लिया । शिकारी ने सिद्‌धार्थ से जब अपना शिकार माँगा तो उन्होंने कैसे उसे समझाया कि मारने वाले से बचाने वाले का हक ज्यादा होता है और फिर मैं उन हंसों के साथ उड़ता हुआ बहुत दूर चला जाता । मेरे पंख तब कमजोर थे, लेकिन मुझसे आगे वाला हंस मेरे लिए उड़ान को आसान बनाता चला जाता । मेरे हिस्से की मेहनत वह करता, और हम साथ-साथ आसमान में बहुत दूर उड़ते चले जाते ।

मेरे मन की उड़ान में सबसे आगे वाला हंस पिता जी की तरह लगता। फिर माँ । फिर चाचा-चाची, हम सारे भाई-बहन और दादी भी ।

दादी तो बूढ़ी हो गई हैं ।

कोई बात नहीं। पिता जी के मजबूत पंख सबके लिए रास्ता बनाते चलेंगे । वे सभी संकटों से दो हाथ-करके सामने दीवार बनकर खड़े रहेंगे । पहले दादी जी ने पिता जी के लिए रास्ता बनाया होगा, अब पिता जी दादी जी के लिए बना रहे हैं । यह परिवार है ।

पिता जी थक जाएँगे, तब ?

तब माँ आगे हो जाएगी । फिर चाचा जी आगे हो जाएँगे और उड़ते-उड़ते मैं भी तो बड़ा हो जाऊँगा, फिर मैं आगे हो जाऊँगा । मैं पिता जी से कहूँगा कि आप आराम कीजिए, मेरे पंख सबके पंखों को आराम देंगे । मेरे पंख सबको साथ लेकर उड़ेंगे ।

जब मैं बड़ा हो जाऊँगा तो सबको हंसों के बारे में बताऊँगा । बताऊँगा कि आदमी भी चाहे तो ऐसे साथ-साथ बहुत दूर तक उड़ सकते हैं ।

एक दिन मैं बड़ा हो गया । बहुत कोशिश की लेकिन आदमी ऐसा

श्रवणीय

रिश्तों को निभाने की सार्थकता को स्पष्ट करने वाली हुमायूँ और रानी कर्मवती की कहानी सुनिए।

कहाँ होता है ? वह एक बार आगे हो जाता है तो सिर्फ अपने लिए सोचने लगता है । उसे पीछेवालों की चिंता नहीं रहती । कई बार पीछे चलने वाले भी आगे निकलने की होड़ में उस अनुशासन को तोड़ देते हैं । कई बार तो अपने पंखों से दूसरों के लिए हवा काटने की जगह उसके लिए मुश्किलें खड़ी कर देते हैं ।

माँ तो कहती थीं कि भगवान के बनाए सभी जीवों में आदमी सबसे बुद्‌धिमान होता है ।

लेकिन मुझे तो हंस बुद्‌धिमान लगते हैं । सबको साथ लेकर उड़ते हैं । एक दिन में दस घंटे उड़ते हैं । हजारों मील उड़ते हैं । सबसे कमजोर हंस भी उनके साथ उड़ लेता है ।

आदमी ऐसा कहाँ करता है ?

अब माँ नहीं हैं ।

होतीं तो पूछता, ''माँ, इन हंसों को रिश्तों का पाठ किसने पढ़ाया ?''

× × ×

आत्मीय रिश्ते

कई साल पहले एक रात हमारे घर की घंटी बजी । तब हम पटना में रहते थे ।

आधी रात को कौन आया ?

पिता जी बाहर निकले। सामने दो लोग खड़े थे । एक पुरुष और एक महिला । पटनावाले हमारे घर के बरामदे में लोहे की ग्रिल लगी थी, जिसमें हम रात में ताला बंद कर देते और पूरा घर सुरक्षित हो जाता ।

पिता जी ने ताला खोला । पूछा कि आप लोग कौन हैं, कहाँ से आए हैं । उन्होंने पिता जी के हाथ में एक चिट्‌ठी पकड़ाई । पिता जी ने चिट्‌ठी पढ़ी और खुश हो गए । उन्होंने आगंतुकों पर आँख मूँदकर विश्वास कर लिया । उन्होंने हमें आवाज देकर बुलाया और कहा कि ये लोग फलाँ जगह से आए हैं, और इन्हें तुम्हारी बुआ जी ने भेजा है ।

बुआ जी ने भेजा है ? वाह !

अब हमारे लिए ये जानना जरूरी नहीं था कि वह कौन हैं, कहाँ से आए हैं । बुआ जी का कहा पत्थर की लकीर था ।

उन्हें हमारी बुआ जी ने भेजा था, यही जान लेना बहुत बड़ी बात थी । सरदी की वह रात थी, फटाफट उनके सोने के लिए एक बिस्तर का इंतजाम किया गया । हम दोनों भाई दो रजाइयों में लिपटे थे, हमारी एक रजाई ले ली गई और कहा गया कि दोनों भाई एक ही रजाई में घुस जाओ । एक रजाई नये मेहमान को देनी है । हमें याद है, हम पहली बार उनसे मिल रहे थे । पिता जी ने अपनी बड़ी दीदी और उनके पूरे परिवार का हाल पूछा और ये

संभाषणीय

घर में अतिथि के आगमन पर आपको कैसा लगता है, बताइए ।

जान लिया कि वे उनके जानने वाले हैं । मतलब हमारे रिश्तेदार नहीं, बुआ की पहचानवाले हैं।

आने वाली महिला की तबीयत थोड़ी खराब थी और पटना मेडिकल कॉलेज अस्पताल में उनका इलाज होना था । चूँकि वह मेरी बुआ जी को जानते थे और बुआ जी के छोटे भाई का परिवार पटना में था इसलिए ये तो सोचने की बात नहीं थी कि वह कहाँ रहेंगे। वह बिना किसी पूर्व सूचना के हमारे घर पहुँच गए थे । उनकी ट्रेन आनी तो शाम को थी, लेकिन ट्रेन के टाइम से न चलने का बुरा कौन मानता है ।

ट्रेन पाँच घंटे लेट पहुँची थी और हमारे वह मेहमान बिना खाए-पिए आधी रात में हमारे घर पहुँच गए थे ।

फटाफट खाना बना। सोने का जुगाड़ हुआ ।

और सुबह उन्हें अस्पताल पहुँचाने का भी ।

वे कोई सप्ताह भर हमारे घर रहे। हम खूब घुल-मिल गए। हम रोज ठहाके लगाते, साथ खाते और पूरी मस्ती करते। ऐसा लग रहा था मानो हम सदियों से एक-दूसरे को जानते हों । बुआ जी ने तिल की मिठाई भेजी थी । दिल्ली में उसे गजक कहते हैं, हमारे यहाँ सब तिलकुट कहते थे । हम सबने तिल और गुड़ की उस मिठाई को खूब मजे लेकर खाया । हमारी बुआ जी सारे संसार का ख्याल रखती थीं और भाई-भतीजों में तो उनकी आत्मा ही बसती थी ।

उन्होंने अपने परिचित भेज दिए, हमने उन्हें रिश्तेदार बना लिया ।

आप जानकर हैरान रह जाएँगे कि हम दुबारा कभी उन रिश्तेदारों से नहीं मिल पाए जो उस रात हमारे घर आए थे । लेकिन हम सब भाई-बहनों के जहन में उस रिश्ते की याद आज भी ताजा है । हम आज भी उनके आने और अपनी रजाई छिन जाने को याद कर खुश होते हैं ।

जब मैं पच्चीस साल पहले भोपाल से दिल्ली नौकरी करने आया था तो मेरे मामा जी ने एक चिट्ठी अपने एक जज दोस्त के नाम लिखकर मुझे भेज दिया था । दिल्ली के किदवई नगर में वह रहते थे। मैं चिट्ठी लेकर उनके घर पहुँच गया । विश्वास कीजिए, जितने दिन उनके घर रहा, परिवार के एक सदस्य की हैसियत से रहा । उनकी बेटियाँ मेरी बहनें बन गईं, और उनका बेटा मेरा भाई । मुझे कार्यालय से आने में देर होती तो वे चिंतित होते। मेरी राह तकते ।

मेरे एक परिजन ने जानना चाहा है कि मैं हर रोज माँ, भाई, पत्नी, पिता और तमाम रिश्तों पर ही क्यों लिखता हूँ ।

उनका कहना है कि ये सारे रिश्ते तो उनके पास भी हैं । फिर रोज-रोज रिश्तों की चर्चा क्यों ? बात तो सही है ।

अपने प्रिय प्राणी की विविध नस्लों की जानकारी अंतरजाल से प्राप्त करके लिखिए ।

लेकिन फिर मैं जब सोचने बैठता हूँ तो यही सोचने लगता हूँ कि क्या सबके पास रिश्ते हैं ? क्या सचमुच रिश्ते हैं ?

कल मेरे पास किसी ने रिश्तों पर कुछ सुंदर पंक्तियाँ लिखकर भेजी।

आज मैं बहुत छोटे में उन्हें आपके सामने प्रस्तुत कर रहा हूँ। आप बहुत गंभीरता से उन पंक्तियों को समझने की कोशिश कीजिएगा । मुझे यकीन है कि आपने हजारों बार पहले भी ये पंक्तियाँ पढ़ी होंगी लेकिन आज एक बार मेरे कहने से पढ़िए। फिर मुझे बताइए कि क्या सचमुच हम सब उन पंक्तियों के किसी कोने के करीब हैं ।

''अकेले हम सिर्फ बोल सकते हैं, लेकिन रिश्तों के बीच बातें करते हैं। अकेले हम मजे कर सकते हैं, लेकिन रिश्तों के बीच उत्सव मनाते हैं। अकेले हम मुसकरा सकते हैं, लेकिन रिश्तों के बीच हम ठहाके लगाते हैं।''

और आखिरी लाइन यह कि ''यह सब सिर्फ इनसानी रिश्तों में ही संभव है।''

मैं रोज-रोज रिश्तों की कहानियाँ सिर्फ इसलिए लिखता हूँ क्योंकि सच यही है कि आज आदमी सबके बीच रहकर भी सबसे अकेला हो गया है । सारे रिश्ते हैं, लेकिन दरअसल कोई रिश्ता नहीं बचा है । हम सब अपनी जिंदगी जीने की तैयारी में इतने व्यस्त हो गए हैं कि हमारे पास स्वयं के लिए भी समय नहीं रहा ।

अब मैं कहीं जाता हूँ तो होटल बुक कराता हूँ। पता नहीं सारे रिश्ते कहाँ चले गए । आपमें से अगर किसी के पास बुआ के उस पड़ोसी का कोई रिश्ता बचा है, तो आप भाग्यशाली हैं।

मैं तो अपने उसी भाग्य की तलाश में हर रोज मुँह उठाए आपके पास पहुँच जाता हूँ।

('समय' संस्मरण संग्रह से)

— ० —

पठनीय

डाक विभाग की ई-सेवाओं के बारे में जानकारी पढ़िए।

शब्द संसार

रफ्तार स्त्री.सं.(फा.) = गति
इनसानी वि.(दे.) = मानवीय
यकीन पुं.सं.(अं.) = विश्वास
जहन पुं.सं.(अ.) = समझ, बुद्‌धि

मुहावरे

संकट से दो हाथ करना = मुकाबला करना
पत्थर की लकीर होना = पक्की बात होना

कहावत

कर भला तो हो भला = परोपकार से अपना उपकार होना

* सूचनानुसार कृतियाँ कीजिए :–

(१) संजाल पूर्ण कीजिए :

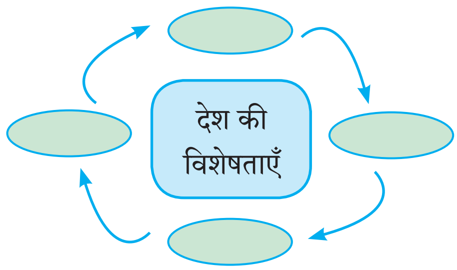

(२) कारण लिखिए :

१. लेखक रोज-रोज रिश्तों की कहानियाँ लिखते हैं – ....

२. हमारे वे मेहमान आधी रात घर पहुँचे – ....

(३) उत्तर लिखिए :

१. रजाइयों की संख्या – [ ]

२. महिला का इलाज यहाँ हुआ – [ ]

(४) कृति कीजिए :

१. पाठ में आए शहरों के नाम – [ ] [ ]

२. तिल से बनी मिठाइयों के नाम – [ ] [ ]

(५) अंतर स्पष्ट कीजिए :

कर सकते हैं	
अकेले हम	रिश्तों के बीच हम

(६) कृदंत तथा तद्धित शब्द बनाइए :

बचना, मानव, उड़ना, चलना, माँगना, व्यक्ति, संस्कृति, अधिकार, शिक्षा, सजना, लिखना, बैठना, इच्छा, क्षण, दौड़ना, आत्मा

कृदंत	तद्धित

अभिव्यक्ति ‘सहकारिता ही जीवन है’ विषय पर अपने विचार लिखिए ।

भाषा बिंदु

(१) निम्नलिखित संधि विच्छेद की संधि कीजिए और भेद लिखिए :

अनु.	संधि विच्छेद	संधि शब्द	संधि भेद
१.	दुः+लभ	--------	--------
२.	महा+आत्मा	--------	--------
३.	अन्+आसक्त	--------	--------
४.	अंतः+चेतना	--------	--------
५.	सम्+तोष	--------	--------
६.	सदा+एव	--------	--------

(२) निम्नलिखित शब्दों का संधि विच्छेद कीजिए और भेद लिखिए :

अनु.	शब्द	संधि विच्छेद	संधि भेद
१.	सज्जन	+	
२.	नमस्ते	+	
३.	स्वागत	+	
४.	दिग्दर्शक	+	
५.	यद्‌यपि	+	
६.	दुस्साहस	+	

(३) निम्नलिखित आकृति में दिए गए शब्दों का विच्छेद कीजिए और संधि के भेद लिखिए :

दिग्गज
साप्ताहिक
निश्चल
भानूदय
निस्संदेह
सूर्यास्त

विग्रह			भेद
______	+	______	(______)
______	+	______	(______)
______	+	______	(______)
______	+	______	(______)
______	+	______	(______)
______	+	______	(______)
______	+	______	(______)
______	+	______	(______)

(४) पाठों में आए संधि शब्द छाँटकर उनका विच्छेद कीजिए और संधि का भेद लिखिए :

उपयोजित लेखन 'मेरा प्रिय कवि/लेखक' विषय पर सौ शब्दों में निबंध लिखिए ।

779ZRJ